Mehul
M.S.J. College
Rajnagar

शीतोष्ण घास मैदानों में मानवीय क्रियाकलाप
Human activities in temperate grassland.

(A) स्थिति → 30°-45° अक्षांशों के बीच स्थित शीतोष्ण घास मैदान :—

(i) यूरेशिया → यहाँ स्टेप्स का विस्तार कालासागर के उत्तर में यूक्रेन से पूर्व में बैकाल झील तक 4800 X 300 Km क्षेत्र मे है।

(ii) उ० अमेरिका → यहाँ प्रेयरी का विस्तार प० मे रॉकी पर्वतपद से पू० मे Great Lakes और उ० मे कनाडा की पीस घाटी से द० मे टेक्सास राज्य तक है।

(iii) द० अमेरिका → अर्जेन्टाइना मे प० मे एण्डिज पर्वत से पू० मे अन्ध महासागर तट और उ० मे ग्रानचाको के द० से द० मे पेटागोनिया मरुभूमि के उ० तक पम्पास मैदान का विस्तार है।

(iv) द० अफ्रिका → हाई वेल्ड, भारत क्षेत्र में इसे वेल्ड कहते हैं।

(v) द० पू० आस्ट्रेलिया → यहाँ इसे Downs कहते हैं। यहाँ मरे और द० डार्लिंग बेसिन क्षेत्र है जहाँ भौतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण मे अद्भुत सामंजस्य है।

— भौतिक पर्यावरण :—

(i) तापमान → उ० गोलार्द्ध मे आंतरिक स्थिति के कारण सामुद्रिक प्रभाव नही पड़ता। अतः महाद्वीपिय जलवायु है। तापान्तर अधिक है। ग्रीष्म ताप 20°-30° C है। शीतकालिन ताप हिमांक से नीचा हो जाता है, क्योंकि ठंडी हवाएं चलती है।

द० गोलार्द्ध मे संकीर्ण स्थल के कारण

सामुद्रिक प्रभाव अधिक है। अतः तापान्तर कम है। शीतकालिन ताप 10°C, ग्रीष्म-ताप 22-25° है। ताप हिमांक से नीचा नहीं गिरता। शीतकाल मृदु होता है। वार्षिक तापान्तर द० में 15°C तक जबकि उ० गोलार्द्ध में 30° से अधिक रहता है।

(ii) वर्षा → वर्ष भर वर्षा होती है। लेकिन वसंत के अंत एंव ग्रीष्म के प्रारंभ मे अधिक होती है। वार्षिक वर्षा 25-70 cm है।

(iii) प्रा० वनस्पति → कम वर्षा के कारण वृक्ष प्रायः नही है। छोटी मुलायम घासे है। वसंत की हल्की वर्षा से घास उग आती है। ग्रीष्म की वर्षा से घासो का विकास होता है। सिर्फ नदियों के किनारे ही कुछ वृक्ष मिलते है।

– सांस्कृतिक पर्यावरण :–

(i) कृषि → प्रमुख पेशा कृषि है। मुख्यतः खाद्यान्नो की खेती होती है। कम व्यय मे अधिक उत्पादन के लिए निश्चित फसल उपजाई जाती है। गेंहू मुख्य फसल है। 70-80% कृषि भूमि पर गेंहू होता है। 10°-30°C ताप, अर्द्धशुष्क जलवायु, चेस्टनट, चरनोजम, प्रेयरी, ह्यूमसपूर्ण उपजाऊ मिट्टी, विस्तृत समतल मैदान गेंहू के लिए उपयुक्त है। उ० अमेरिका और यूरेशिया के ठंडे भागो मे बसंतकालिन गेंहू और शेष भागों मे शीतकालीन गेंहू होता है। ये क्षेत्र गेंहू की Grainary है।

बड़े (200-1500 हेक्टेयर वाले) फार्मो पर गेंहू की यांत्रीक कृषि अंतर्राष्ट्रिय व्यापार के लिए

PAGE NO :
DATE :

होती है। एक फसली क्षेत्र होने से प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम है। पर कम आबादी के कारण प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक है। अतः निर्यात के लिए बच जाता है। जौ, जई, राई, मक्का, सोयाबीन, कपास, चुकन्दर तथा अन्य की खेती स्थानीय खपत के लिए ही होती है। U.S.A में इलिनोइस आयोवा राज्यों में मक्का (सूअर के लिए) मुख्य फसल है।

• यंत्रीकृत विस्तृत कृषि → यहाँ यंत्रीकृत विस्तृत कृषि होती है। आबादी कम होने से मानव-श्रम का उपयोग कम है। ट्रैक्टर, डिस्क, हैरो, ड्रिल, हार्वेस्टर, थ्रेसर आदि यंत्रों का उपयोग अधिक है।

(ii) पशु एवं पशुपालन → तृणभोजी पशुओं में गाय, भेड़, बकरी, घोड़े, खच्चर, खरगोश, शाही, हिरण आदि और मांसाहारी में भेड़िया, लोमड़ी, डिंगो कुत्ते, जंगली बिल्ली आदि यहां है।

ये पहले घुमक्कड़ चरवाहे के क्षेत्र थे। पर कृषि विस्तार के कारण पशुचारण-क्षेत्र सिमट गए हैं। पशुचारण गौण हो रहा है पर पम्पास में गौ-पशु, भेड़, द० अफ्रीका एवं द०पू० आस्ट्रेलिया में भेड़ अधिक हैं। Dairy farming भी विकसित है। ऊन, दूध, पनीर, मक्खन - निर्यात में ये क्षेत्र अग्रणी हैं।

(iii) खनिज एवं उद्योग → उ० अमेरिका के प्रेयरी एवं यूरेशिया के स्टेप्स क्षेत्रों में कोयला, पेट्रोलियम के विशाल भण्डार हैं। आस्ट्रेलिया के इन क्षेत्रों में सोना-ताँबा मिलता है। कृषि एवं पशु आधारित उद्योग अधिक हैं।

Scanned with CamScanner

PAGE NO :
DATE :

(iv) यातायात → उ० अमेरिका में Canadian-Pacific एवं अन्य, यूरेशिया में Trans-Siberian एवं पंपास, वालपरेसो - ब्यूनसआयर्स प्रमुख Trans continental Rlys है। सड़क-घनत्व भी अधिक है। नदियाँ भी ~~सड़क~~ प्रमुख परिवहन साधन है।

(v) निवास → जन घनत्व कम है। प्रेयरी, पम्पास, डाउन्स एवं द० अफ्रिका में यूरोपियन जा बसे हैं। इनके पृथक-पृथक ~~फार्म~~ farmsteads है। अतः प्रकीर्ण अधिवास है। पहले इन क्षेत्रों में अमेरिका में रेड इण्डियंस, Guacho, द० अफ्रिका में नीग्रो, होटेनटाट, बान्टू; आस्ट्रेलिया में आस्ट्रेलाइडस एवं यूरेशिया में किरगिज मूलवासी थे। ये घुमक्कड़ थे। पशुचारण एवं शिकार इनका पेशा था। अभी भी पशुचारकों के स्थायी घर नहीं होते।

— भविष्य → स्वास्थ्यवर्धक शीतोष्ण जलवायु, उपजाऊ मिट्टी, उन्नत कृषि तकनीक, समतल धरातल आदि के कारण ये भविष्य के भण्डार है। कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों की दृष्टि से ये आदर्श "विकास क्षेत्र" है।